रूह अल्ला आए दसमी मिने, रहे बरस चौहत्तर ।
ताए तीन सौ तेरे मिली, पाई कुरान में पटन्तर ॥८५॥

कुरान में लिखे अनुसार ईसा रूह अल्लाह श्यामा महारानी १०वीं सदी में आए। उन्होंने श्री देवचन्द्रजी के तन में बैठकर ७४ वर्ष तक लीला की और ३१३ ब्रह्मसृष्टियां उन्हें मिली ।

ए संक्षेप बिरत का, एक एक कह्या सुकन ।
विस्तार इत बहुत है, सब ठौर पावें मोमिन ॥८६॥

इस प्रकार कुल परमधाम २५ पक्ष और जागनी लीला का संक्षिप्त में एक-एक शब्द वर्णन होता है। इस वृत्त का विस्तार तो बहुत बड़ा है और सब ठिकानों का ज्ञान मोमिनों के पास है ।

ए बिरत श्री राज सुनत हैं, तब होत अरून उदे ।
सब सेवा में सनमुख, हुआ प्रात को समें ॥८७॥

आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी इस प्रकार वृत्त सुन रहे हैं और इतने में सूर्योदय होने का समय हो जाता है । प्रातःकाल होते ही सेवा करने वाले सुन्दरसाथ सेवा में हाजिर हो जाते हैं ।

महामत कहे ऐ मोमिनों, ए आठों पहर की बीतक ।
अब सरूप साथ को देत हैं, सो कहूं सोभा हक ॥८८॥

धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि हे सुन्दरसाथ जी ! ये श्री पन्ना जी में आठों पहर की लीला, सेवा का वृत्तान्त आपको सुनाया है । ये लीला करते ही नश्वर शरीर को त्याग दिया और उनके अंदर विराजमान स्वरूप, अब सुंदरसाथ में बैठकर लीला करेंगे, ये सब श्री राजजी महाराज की अपनी शोभा है ।

प्रकरण ६१, चौपाई ४३३२

दिन आठों पहर की, कही बिरत जो ए ।
नित कारखाने सेवहीं, कहूं साथी सब सेवन के ॥१॥

धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते है कि हे सुंदरसाथ जी । जिस प्रकार श्री पन्ना जी में मोमिनों (ब्रह्मसृष्टियों) ने अपने धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी के असल स्वरूप की पहचान करके संसार को, जिसे दुनियां कहती ही है कि सपना है, उसे स्वप्ने की तरह छोड़कर दिखाया और परमधाम के माफक ही अपने धनी पर तन, मन, धन अर्पण कर लोक-लाज-मर्यादा को छोड़कर चरणों में समर्पित होकर जिस प्रकार आठों पहर दिन-रात सेवा की, वह सब वृत्तान्त आपके सामने कहा है । अब इतनी बड़ी मोमिनों की जमात की सुंदर ढंग से व्यवस्था करने के लिए जो-जो और जिस-जिस सुंदरसाथ ने सेवा की, उन सुंदरसाथ के परिचय कराते हैं ।

Nijanand App

मूल कुल दीवान गिरी, थी सेवा गरीब दास ।
सो नित अरज करें, अब चले न सेवा मों पास ॥२॥

हरिद्वार से ही गरीबदास को "दीवान" पद से सुशोभित कर दिया था और गरीबदास जी वहां से रामनगर तक कुल सारी सेवा की व्यवस्था करते थे और जब सुंदरसाथ की संख्या बढ़ गई तो वह स्वयं अर्जी करते थे कि "हे धनी ! अब ये सेवा मुझ से अकेले नही हो पा रही है ।"

एह तुम देओ और को, मजल राम नगर ।
कही बहुत आतुर होए के, तब हुआ हुकम लाल पर ॥३॥

तब बहुत ही व्याकुलता से रामनगर में अर्जी की कि "हे धनी ! ये सेवा अब मेरे काबू से बाहर है और मैं ठीक ढंग से व्यवस्था नही कर पा रहा हूं ।" तब स्वयं लालदास जी को अपने हुकम से कुल सेवा का कार्य-भार सौंप दिया ।

गढ़े से हुकम हुआ, पातसाह के हजूर ।
तब बृन्दावन को दई, जान के काम जरूर ॥४।

गढ़े में जब लालदास को दिल्ली में औरंगजेब बादशाह के पास फिर जाकर संदेश देने का हुकम हुआ तो ये संदेश देने का कार्य जरूरी समझकर वृन्दावन को सब सेवा का भार सौंप दिया ।

लाल का रहना हुआ, हुकम ना हुआ सो तेह ।
सुनी ए सकुण्डल ने, परने जाए कहो एह ॥५॥

फिर कुरान में लिखे अनुसार कि जब तक हमको कोई परमधाम का मोमिन, जो बादशाह हो, नही मिलेगा तब तक औरंगजेब को संदेश देने में हमको सफलता प्राप्त नहीं होगी तो महाराजा छत्रसाल जी से मुलाकात हुई और श्री जी ने परखा कि ये परमधाम की साकुण्डल बाई की वासना है और रामनगर से ही देवकरण को संदेशा देकर मऊ भेजा ।

तब लालदास को पठए, ले परने को पैगाम ।
महाराजा सों मिल के, किया बुलावने को काम ॥६॥

तब पन्ना जी पहुंचकर पन्ना से विजियाभिनन्द बुध निष्कलंक अवतार के आने का पैगाम लेकर लालदास जी को महाराजा छत्रसाल जी के पास भेजा । लालदास जी ने उनको गीता, भागवत और अन्य भविष्य के ग्रन्थों से जब सब भेद समझाए तो पहचान हो गई और महाराजा छत्रसाल जी ने तुरंत श्री जी को बुलाने के लिए लालदास जी को भेजा ।

Nijanand App

आए पहुंचे परना में, लाल चले ना तब ।
तब छोड़ी वृन्दावन नें, सौंपी लाल को सब ॥७॥

तब आप ''श्री जी'' मऊ गए । सब विध पहचान कराकर तारतम दिया और जब वापिस फिर पन्ना पहुंचे तो वृन्दावन से भी सारी व्यवस्था नही हो पा रही थी तो उन्होंने भी सेवा को छोड़ा तो फिर श्री लालदासजी को कुल व्यवस्था का बोझ अपने हाथों सौंपा ।

दे पठई कुंजी को, लाल को हुआ हुकम ।
एह आई अज्ञा से, सेवा करो अब तुम ॥८॥

तब फिर अपने हुकम से चाबी उठाकर श्री लालदास जी को कुल व्यवस्था सौंप दी और कहा - ''ऐसा ही धनी का हुकम है । अब इस सेवा के योग्य तुम ही हो । सो करो ।''

मूल छत्तीस कारखाने का, सब दिया हाथ लाल के ।
जिनको जो कछू चाहिए, सो सबों पहुंचावे ये ॥९॥

लालदास जी ने कुल सेवा को ३६ विभागों में बांट दिया और इस तरह सुन्दर ढंग से व्यवस्था कर दी कि जो वस्तु जिस समय भी जिस सुन्दरसाथ को चाहिए, देने वाले वह सामान हर एक को उनके डेरों में पहुंचाते थे ।

एक मूल श्री बाई जी के, सब पहुंचावें साज ।
बस्तर जो पहिनन के,तुमें क्या चाहियत हैं आज ॥१०॥

''श्री जी'' और श्री बाई जू राज के कुल वस्त्र इत्यादि की सेवा स्वयं श्री लालदास जी अपने हाथ से करते और पहले से ही श्री बाई जू राजजी से पूछ लेते थे कि आपको क्या-क्या चाहिए ?

दोनों सरूप और साथ के, सब बस्तर भूषन ।
पहुंचावें सनेह सों, नित नित रंग नौतन ॥११॥

श्री प्राणनाथ जी और बाई जू राज के सब वस्त्र, भूषण बड़े स्नेह भाव से लालदास जी पहुंचाते थे और सब सुन्दरसाथ की भी सेवा करने वाले नित्य नये-नये भाव से करते थे ।

और अनाज सब जात के, साक तरकारी सब ।
मेवा मिठाई हरड़े, जो जिन समें चाहिए जब ॥१२॥

और सब जाति का अनाज साग-तरकारी सब प्रकार की और मेवा, मिठाई, हरड़ें इत्यादि जो जिसको जिस समय चाहिए होती थी, अपना-अपना सामान देने वाले सुन्दरसाथ डेरों पर ही जाकर सुन्दरसाथ को पहुंचाते थे ।

Nijanand App

रूई सूत और बासन, निरगुन और सरगुन ।
सब पहुंचावें समें समें, आन आन देवें सैंयन ॥१३॥

फकीरी और गृहस्थ के पहनने के कपड़े और भी जो वस्तुएं जिस समय सुन्दरसाथ को जरूरत होती थी, उनके स्थान पर ही पहुंचाने की सुन्दर सेवा की व्यवस्था थी ।

हाजिर रहें हजूर में, बैठे श्री राज के पास ।
आगे पीछे ना होवहीं, ये सेवा करें खास ॥१४॥

श्री लालदास जी ने इतने सुन्दर ढंग से व्यवस्था कर रखी थी कि एक बार सब विभागों की देखभाल कर लेने के बाद २४ घण्टे "श्री जी" के चरणों में भी हाजिर रहते थे । इस प्रकार, लालदास जी की ये खास सेवा थी ।

इनके पास रहत हैं, इन कारखाने में ।
घनस्याम लेखा लिखें, धरम दास खजानें ॥१५॥

अब विशेष-विशेष विभागों में कौन-कौन प्रमुख सेवा करने वाले सुन्दरसाथ थे, उनके नाम लिखते हैं। उनमें से घनश्याम भाई लेखा लिखने का काम करते थे । धर्मदास खजाने में रहते थे ।

सन्त दास सामिल रहें, और चतुर रहे इत ।
और मानक रहत हैं, कल्यान भी आवत ॥१६॥

संतदास, चतुर, मानिक व कल्याण भी इनके साथ खजाने की सेवा करते थे ।

भिखारीदास भी रहें, खजाना मकरन्द रखें ।
इन पीछे गीगे को दई, सेवा करें सब कोए ॥१७॥

भिखारीदास भी खजाने की सेवा में शामिल रहते थे और सुन्दरसाथ को नकदी देने की सेवा मकरंद जी करते थे । इनके बाद यही सेवा गीगे को दे दी । इस प्रकार सब सुन्दरसाथ सेवा में शामिल रहते थे।

कपड़ा मकरन्द देवहीं, सब साथ और राज ।
नित सेवे सनेह सों, फेर खेम करन रखा इन काज ॥१८॥

"श्री बाई जू राजजी" व "श्री जी" के लिए तथा सब सुन्दरसाथ को कपड़े देने की सेवा मकरंद दास बड़े स्नेह व प्यार से करते थे । फिर खेमकरण को ये सेवा दे दी गई ।

Nijanand App

पहिले नारायन देवें कपड़ा, रहे सेवा में हुकम ।
देवें सब सनेह सों, फेर करी खेमकरन आतम ॥१९॥

पहले नारायण भाई को कपड़ा देने की सेवा दी गई । फिर खेमकरण बहुत ही आत्मभाव के प्यार से इसी सेवा को करने लगे ।

महामत कहे ए मोमिनों, ए साथी सेवा के ।
कहों केता अजूं बहुत हैं, जिने प्यारे चरन धनी के ॥२०॥

अब धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि हे सुंदरसाथ जी ! अभी भी बहुत से सुन्दरसाथ के नाम रह गए हैं । जो ''श्री जी'' के स्वरूप को पहचान कर उनके चरणों की सेवा को ही महान सेवा समझ कर करते थे ।

(प्रकरण ७२, चौपाई ४३५२)

गरमी के दिनों में, सब सेवा खुसबोए ।
अतर खरीद सब जात के, आवे तुंग भरे गुलाब के सोए ॥१॥

सर्दियों के दिनों की सेवा का वृत्तान्त आपको पहले बताया है । अब गर्मी की ऋतु में सुन्दरसाथ किस तरह अपने प्राण प्रीतम को रिझाकर सेवा करते थे, वह आपसे कहते हैं । गर्मी के दिनों में सुगंधित इत्र, गुलाब, हर जाति के खरीद-खरीद कर बड़े-बड़े मटके लाए जाते थे ।

अगर चोवा खस खाना, करें सेवा गंगाराम ।
खसबोय खाना सब रखत हैं, एही खरीद करें इस ठाम ॥२॥

अगरबत्ती, इत्र, सेंट, खस-खस खरीदने की सेवा गंगाराम करते थे । गंगाराम खरीद-खरीद कर अपने पास रखते थे सब सुगंध विभाग की सेवा गंगाराम करते थे ।

खस खाना बनावत, टटियां अपने हाथ ।
छप्पर छांटे भली भांत सों, छिटकत पानी साथ ॥३॥

खसखस की टट्टियां सुन्दरसाथ बंगला जी में लगाने के लिए अपने हाथ से बहुत सुन्दर ढंग से बनाते थे और उस पर पानी भी छिड़कते थे ।

टटियां बांधने को, एक ओका गंगा राम ।
सेवा कृष्णदास दयाल, रहे महम्मद खां इन काम ॥४॥

टट्टियां बांधने की सेवा में ओका, गंगाराम, कृष्णदास, दयाल और मुहम्मद खां भी शामिल होते हैं।

Nijanand App

फते महम्मद आवत, खड़ा करन खस खान ।
बंगले के बीच में, सब सेवा करें समान ॥५॥

फतेह मुहम्मद खां खस-खस की टट्टियां को खड़ी करने की सेवा में शामिल होते हैं और सब बंगला जी में एक समान टट्टियां खड़ी की जाती हैं ।

काम बढ़ई का पड़े, रहे मोहन हीरा मन ।
सुतरी डोरी ल्यावन को, बूल चन्द मोहन ॥६॥

बढ़ई के काम की सेवा मोहन और हीरामन करते थे । सुतरी और डोरी लाने की सेवा बूलचन्द और मोहन भाई करते थे ।

बांस कमचिएँ ल्यावत, पुरबीए खोज पर ।
समारने बांसन को, जग्गू वीर जी बुलावने पर ॥७॥

पूर्वीय भाई जंगल में से चुन-चुनकर बांसों की कमचियां लाते हैं और जग्गू और वीर जी बासों को संवारने की सेवा करते हैं ।

लाल खारूआ चाहिए, ल्यावत है नारायन ।
बनाए के टाढ़ी करें, पोंढ़त है सुभान ॥८॥

खसखस की टट्टियों पर लाल कपड़ा, जिसे खारूआ कहते हैं, उसे लाने की सेवा नारायण भाई करते हैं । इस प्रकार बंगला जी में चारों ओर खसखस की टट्टियां बनाकर खड़ी करते हैं क्योंकि बंगला जी में धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी सुभान पौढ़ते हैं ।

जल छिरकत सब बंगले, उठाए सब बिछौनें ।
इनाएत खां भगवान, गंगाराम सेवें इनमें ॥९॥

बंगला जी के अंदर पड़े सुंदरसाथ के बिछौनों को हटाकर सब बंगला जी में जल छिड़कने की सेवा इनायत खां, भगवान और गंगाराम करते हैं ।

बिछौने वाले बिहारीदास, सब साथ दौड़े इन काम ।
वीरजी मोदी जल छिरकत, कर राज की पहिचान ॥१०॥

बंगला जी में पड़े बिस्तरों को लपेट कर उठाने की सेवा बिहारीदास जी करते हैं और भी सब सुंदरसाथ उनमें शामिल होता है और जल छिड़कने की सेवा वीर जी मोदी करते हैं । इन सबको पहचान हो गई कि यही हमारे धाम धनी हैं ।

Nijanand App

नन्दराम पखाले मंगावत, आखर बल्लभ इत छिरकत ।
तर करें जिमी को, गरमी न फरकत ॥११॥

नंदराम जी मशकें मंगवाते हैं और वल्लभदास जल छिड़कने की सेवा करते हैं । बंगला जी की जमीन को इस प्रकार जल से तर कर देते हैं कि गर्मी निकट न आ सके ।

वाओ ढोलें इत हजूरी, खड़े रहें इक पाये ।
बिहारी वाओ ढोलत, कबूं गंगादास इत आए ॥१२॥

जिस पलंग पर आप श्री जी पौढ़ते हैं, उसके चारों पायों के पास एक-एक सुंदरसाथ वाऊ ढुलाने के लिए पंखा लेकर खड़े ही रहते हैं । बिहारीदास वाऊ ढुलाते हैं । कभी-कभी गंगादास भी इनकें साथ शामिल होते हैं ।

संकर हाथ में रहत हैं, हमेसा ही बिजने ।
जब महाराजा आवत, वाओ ढोलें इन समें ॥१३॥

शंकर भाई अपने हाथ में पंखा लेकर ही खड़े रहते हैं । जब महाराजा छत्रसाल जी आते हैं तो वो भी पंखा ढुलाने की सेवा करते हैं ।

और साथी सब ढोलत, जहां लग पौढ़त श्री राज ।
चार जने इत खड़े रहें, वल्लभ संकर एही काज ॥१४॥

जब तक आप ''श्री जी'' पौढ़े रहते हैं, तब तक चार सुंदरसाथ खड़े होकर वाऊ ढुलाते ही रहते हैं। शंकर और वल्लभ विशेषकर यही सेवा करते हैं ।

गंगादास गंगाराम, और बिहारीदास ।
सन्त दास सेवन में, खड़े रहें ए खास ॥१५॥

गंगादास, गंगाराम, बिहारीदास और संतदास खासकर पंखा ढुलाने की सेवा में खड़े रहते हैं ।

और साथी भी सेवन को, खड़े रहें सदा सनमुख ।
जिनों सुख लिया इन समें, कह्यो न जाए इन मुख ॥१६॥

और भी सुंदरसाथ इस सेवा को करने के लिए हाजिर खड़े ही रहते हैं । जिन्होंने उस समय सेवा करके सुख ले लिया । उस सेवा की महिमा इस मुख से नही की जा सकती ।

Nijanand App

इन सेवा मिने पहिले, रहते निरमल दास ।
ता पीछे प्रेमदास नें, सेवा करी जो खास ॥१७॥

इस सेवा में पहले निर्मलदास रहते थे । फिर प्रेमदास जी भी इस सेवा में शामिल हुए और इस खास सेवा को किया ।

लाल मुकुन्ददास रहत हैं, निरमल दास के संग ।
गोविन्द दास सूरती, मगन सेवत सर्वा अंग ॥१८॥

लालदास, मुकुन्ददास, निर्मल दास और गंगादास सूरती ये सब मग्न होकर सेवा करते हैं ।

जमुना मानक इन समें, रहें हजूर सेवा में ।
राम बाई आखर में, ए सबे हुई बल्लभ सें ॥१९॥

इस सेवा में जमुना, मानिक, रामबाई भी शामिल रहती थी और वल्लभदास जी भी इस सेवा में शामिल रहते थे ।

हकीकत खां भेजत है, गुलाब के सीसे ।
छिरकत हैं सब सेज पर, गंगाराम इन समें ॥२०॥

हकीकत खां गुलाब जल की बोतलें खरीद-खरीद कर भेजता है और उस गुलाब जल को सेज्या पर छिड़कने की सेवा गंगाराम करता है ।

मिहीं वस्तर पहिनन के, प्रेमदास ल्यावे ।
आखर को इन पे, नन्दराम पासे जावे ॥२१॥

गर्मी की ऋतु में "श्री जी" के पहनने के लिए बारीक वस्त्र प्रेमदास लाते हैं और फिर बाद में नंदराम जी इस सेवा को करते हैं ।

आई फेर बल्लभ पास, यापे सब सेवा को बोझ ।
बहुत मेहनत इन करी, सब सेवा की खोज ॥२२॥

और फिर वल्लभदास ने इस सेवा को ले लिया । वह सब सेवा करते ही रहते हैं और २४ घण्टे खोज-खोज कर सेवा करते रहते थे ।

Nijanand App

महावजी भाई इन समें, आए पोरबन्दर से ।
सेवा अनार राखवे की, और पत्री लिखवे की सेवा में ॥२३॥

महावजी भाई इस समय पोरबंदर से आएऔर वह लिखने वाली स्याही का कुंजा भरकर रखने और पत्र लिखने की सेवा करते हैं ।

आसबाई इन समें, लागत हैं चरन ।
श्री राज हेत कर बुलावत, प्रसन्न होए के मन ॥२४॥

अब ऐसी सुंदर सेवा की व्यवस्था करते हुए आप आसबाई लालदास जी आकर चरणों में प्रणाम करते हैं और आप धाम दुल्हा ''श्री जी'' भी बड़े प्रसन्न होकर लालदास को बुलाकर आशीर्वाद देते हैं ।

महामत कहें सैयन को, ए सेवा के कहे साथ ।
इहां तेही खड़े रहे, जाके धनीएं पकड़े हाथ ॥२५॥

अब आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि हे सुन्दर साथ जी ! उस समय जिन्होंने पन्ना जी में अपने धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी के सरूप की पहचान करके पल-पल सेवा की । उनमें से कुछ के नाम आपसे कहे हैं और इन सुन्दरसाथ ने श्री राजजी महाराज धाम दुल्हा श्री प्राणनाथ जी की मेहर से सेवा करते-करते ही अपने शरीर को त्याग दिया । ये सब श्री राजजी महाराज की मेहर से ही होता है ।

(प्रकरण ७३, चौपाई ४३७७)

कुल प्रकरण - ७३, कुल चौपाई ४३७७

Nijanand App